कृण्वन्तो विश्वमार्यम् यतेमहि स्वराज्ये
website : www.chintanresearchjournal.com ISSN : 2229-7227
Impact Factor : 6.750

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)

(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))

(An International Peer Reviewed and Refereed Research Journal)

वर्ष : 13 अंक : 49

विक्रमी सम्वत् : 2080

अक्टूबर-दिसंबर 2023

संपादक

आचार्य (डॉ०) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत

ISO 9001 : 2015

शोध–आलेखानुक्रम

International Refereed
Impact Factor : 6.750
Peer reviewed
'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN: 2229-7227)
वर्ष 13, अंक 49 (पृ.सं. 107-112)
विक्रमी सम्वत्: 2080 (अक्टूबर-दिसंबर 2023)

बीकानेर में जैन मन्दिरों का विकास और श्री शांतिनाथ मन्दिर, (नाहटों का चौक, संवत् 1897) एक अवलोकन

डॉ. रीतेश व्यास
प्राचार्य
सिस्टर निवेदिता कन्या महाविद्यालय
बीकानेर (राजस्थान)

शोध आलेख सार

बीकानेर के बसने में जैन श्रावकों का बड़ा योगदान रहा है। राव बीकाजी के साथ जोधपुर से आने वाले श्रेष्ठि वर्ग में बोहिथरा वत्सराज दादि का नाम प्रमुखता से आता है। चूंकि वह समय आध्यात्मिक युग था इसलिए शहर बसने के साथ-साथ जैन श्रावकों ने अपने इष्ट को स्थापित करना, उनके मन्दिर बनाना शुरू कर दिया। बीकानेर के मन्दिरों के बनने के पहले बोहिथरा देवराज ने चतुर्विषति पट्ट बनवा कर सं. 1534 श्री जिनभग्रसूरि पट्ट श्री जिनचन्द्रसुरि ने प्रतिष्ठा करवाई। संभवतः यह प्रतिमा के बीकानेर में आते समय वे साथ लाए और नियमित पूजा-अर्चना भी करते थे। श्री महावीर जी, बैदों के चौक में एक धातु प्रतिमा सं 1555 में विकमपुर में देवगुप्तसूरि प्रतिष्ठित है। बीकानेर में हुई प्रतिष्ठा में यह सबसे पहला प्रमाण है। कहा जाता है कि बीकानेर के पुराने किले की नींव जिस शुभ मुहूर्त में डाली गई थी, उसी समय में श्री आदिनाथ मुख्य चर्तुविष जिनालय का शिलान्यास किया गया था।

मुख्य शब्द : जैन मन्दिर, जिनालय, वैष्णव मन्दिर।

मन्दिर स्थापत्य कला का विकास मूर्ति पूजा के परिणामस्वरूप हुआ, जो जैन धर्म में कम से कम इतिहास काल के आरम्भ से प्रचलित रही है। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से हमें जैन मूर्तियों, गुफा मन्दिरों और निर्मित देवालयों के अस्तित्व के प्रत्यक्ष प्रमाण मिलने लगते हैं।

जैन लोगों ने अपने मन्दिर निर्माण में विभिन्न क्षेत्रों और कालों की प्रचलित शैलियों को तो अपनाया, किन्तु उन्होंने अपनी स्वयं की संस्कृति और सिद्धान्तों की दृष्टि से कुछ लाक्षणिक विशेषताओं को भी प्रस्तुत किया, जिनके कारण जैन कला को एक अलग ही स्वरूप मिल गया। कुछ स्थानों पर उन्होंने समूचे **मन्दिर नगर** ही खड़े कर दिए।

बीकानेर के जैन मन्दिरों का इतिहास

बीकानेर के बसने में जैन श्रावकों का बड़ा योगदान रहा है। राव बीकाजी के साथ जोधपुर से आने वाले श्रेश्ठि वर्ग में बोहिथरा वत्सराज दादि का नाम प्रमुखता से आता है। चूंकि वह समय आध्यात्मिक युग था इसलिए शहर बसने के साथ-साथ जैन श्रावकों ने अपने इष्ट को स्थापित करना, उनके मन्दिर बनाना शुरू कर दिया। बीकानेर के मन्दिरों के बनने के पहले बोहिथरा देवराज ने चतुर्विषति पट्ट बनवा कर सं. 1534 श्री जिनभग्रसूरि पट्ट श्री जिनचन्द्रसुरि ने प्रतिष्ठा करवाई। संभवतः यह प्रतिमा के बीकानेर में आते समय वे साथ लाए और नियमित पूजा-अर्चना भी करते थे। श्री महावीर जी, बैदों के चौक में एक धातु प्रतिमा सं 1555 में

विक्रमपुर में देवगुप्तसूरि प्रतिष्ठित है। बीकानेर में हुई प्रतिश्ठा में यह सबसे पहला प्रमाण है।[1] कहा जाता है कि बीकानेर के पुराने किले की नींव जिस शुभ मुहूर्त में डाली गई थी, उसी समय में श्री आदिनाथ मुख्य चर्तुविष जिनालय का शिलान्यास किया गया था। इस मन्दिर के लिए मूलनायक प्रतिमा मण्डोवर से सं 1380 में श्री जिनकशलसूरि जी द्वारा लाई गई थी। सं. 1561 में देवालय बनकर तैयार हो गया था। यह पहला मन्दिर था जो राव बीकाजी के राज्यकाल में ही बनकर तैयार हो गया था।

सामान्य धारणा है कि भांडासाह का मन्दिर उससे पहले का है, लेकिन वास्तविकता तो यह है कि यह मन्दिर चिंतामणी जिनालय के कारण प्रसिद्ध हुआ। भाण्डाशाह मन्दिर सं. 1571 में बन कर तैयार हुआ। वत्सराज के पुत्र कर्मसिंह ने नमिनाथ जी का मन्दिर बनवाया जिसकी स्थापना सं. 1556 में पूर्णाहुति सं. 1570 में हुई थी। लौकागच्छ पट्टावली के अनुसार श्री महावीर जी मन्दिर, बैदों का चौक, की नींव सं 1575 को विजयदशमी को रखी गई थी। श्री नमिनाथ जिनालय के मूलनायक सं. 1593 में प्रतिष्ठित है। 16वीं शताव्दी तक चार मन्दिर बन गए थे। सं. 1616 में बीकानेर से निकले शत्रुंजय यात्रीसंघ की चैत्यपरिपाटी में गुणरंग गणि ने बीकानेर के इन चार मन्दिरों का ही वर्णन किया है।[2]

बीकनयरह तणह संघि उच्छव रली, यात्रा संत्रुंजगिरि पंथ कीधी वली।
ऋषभ जिण सुमति जिण नमि सुहकरो, वीर सिहत्य वर राय कुल सुन्दरो।।

अत: 1616 तक ये चार मन्दिर ही बने थे। इसके बाद सं. 1633 में चिंतामणी मन्दिर में अकबर के दरबार से लाई गई मूर्तियों के लिए अलग मन्दिर बनवाया गया। इस प्रकार पांचवा मन्दिर श्री वासुपूज्य स्वामी का बना। सं 1644 में बीकानेर से निकले यात्री संघ की गुणविनय जी कृत चैत्य परिपाटी में इन पांचों मन्दिरों का वर्णन मिलता है–

पद्म जिण वंदि बहु भाव पुरिय मणं, जिण चमवि नमि वासुपूज्यं जिने।
वीर जिण वीर गंभीर गुण सुन्दरं, कुसलकर कुसलगुरू भेटि महिमाधरं।।[3]

इससे स्पष्ट है कि सं. 1644 तक बीकानेर में केवल पांच ही जिनालय थे। इसके बाद सं. 1662 मिती चत्र सुदि 7 को नाहटों की गुवाड़ में एक दिव्य और भव्य शत्रुंजयावतार ऋषभदेव भगवान के मन्दिर की प्रतिष्ठा युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि जी के कर कमलों से हुई। डागों की गुवाड़ में भी महावीर जी का जिनालय बना है, लेकिन उसके निर्माण को लेकर संषय है। जबकि युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि जी के विहार पत्र में भी कुछ उल्लेख मिलता है। पत्र के अनुसार सं. 1663 में भी बीकानेर में सूरि जी के द्वारा प्रतिष्ठा होने का वर्णन मिलता है। जिससे माना जा सकता है कि इस मन्दिर की प्रतिश्ठा 1663 में ही हुई होगी। कविवर श्री समयसुन्दर जी लिखित विक्रमपुर चैत्य परिपाटी में इन सात जिनालयों का वर्णन है, जो सम्भवत: 1664 की है। इसी समय श्री अजितनाथ जिनालय का निर्माण हुआ। इस प्रकार मन्दिरों की संख्या आठ हो जाती है जिसका उल्लेख नागपूरीतपागच्छ के कवि विमलचारित, कनककिर्ति, धर्मसिंह, लालखुषाला तथा समयसुन्दरजी के तीर्थमाला स्तवन में मिलता है।

बीकानेर ज वंदियै चिरनंदियैरे अरिहंत देहरा आठ।

इस विवेचन से कहा जाता है कि बीकानेर की प्रसिद्धि आठ मन्दिरों के रूप में होने लगी। इसी समय दो गुरू मन्दिरों की प्रतिश्ठा भी हुई, जिनमें पाश्‍र्वचन्द्रसूरि स्तूप सं. 1662 और जिनचन्द्रसूरि पादुका स्तूप सं. 1673 प्रमुख है। उपलब्ध चैत्य परिपाटियों में से धर्मसिंह और लाल खुशाल की कशतियां सं. 1759 की है एवं सं. 1765 की बीकानेर गजल में भी इन आठ मन्दिरों का ही उल्लेख है। जयसागर की सं. 1801 में लिखित तीर्थमाला स्तवन में **आठ चैत्ये बीकानेरे** उल्लिख्ति है। कविवर रघुपति रचित श्री शांतिनाथ स्तवन में 9वे मन्दिर का उल्लेख करते हुए लिखा है कि शांतिनाथ जी का मन्दिर सं. 1817 मार्गशीर्ष कृष्णा 5 को पारख जगरूप के द्वारा बनवाया गया था, जो चिंतामणि जी मन्दिर में है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रथम 150 वर्षों में बीकानेर में ये 9 मन्दिर बन चुके थे, जो अन्य मन्दिरों की अपेक्षा अधिक है।

19वीं शताब्दी में कई मन्दिरों का निर्माण और पुनरूद्धार हुआ। जिसमें अजितनाथ और गौड़ीपार्श्वनाथ में मन्दिर है जिन्हे पुर्ननिर्मित किया गया था। सं. 1829 में नाहटों की गुवाड़ में पार्श्वनाथ जी व 1871 में श्रीसुपार्श्वनाथ के मन्दिर बने। 1872 में नाहटा बगीची में पार्श्वनाथ जी की गुफा बनी। 1881 में ही कोचरों की गुवाड़ में पार्श्वनाथ जी प्रतिष्ठित हुए। सीमंधर स्वामी जो भांडासाह मन्दिर में हैं 1887 में तथा सं. 1889 में गौड़ीपार्श्वनाथ में सम्मेत शिखर बना। सं. 1893 में बेगानियों में चन्द्रप्रभु जी स्थापित हुए। कोचरों के चौक में सं. 1893 में ही आदिनाथ का जिनालय बना और इसी प्रकार सं. 1897 में नाहटों की गुवाड़ में शांतिनाथ जी प्रतिशिठत हुए।

यही क्रम 20वीं शताब्दी में भी चलता रहा। 1905 में बैदों के चौक के महावीर जी में संखेश्वर पार्श्वनाथ जी की देहरी और इसी समय पास की देहरी में पंचकल्याणक, सिद्धचक्र व गिरनार के पट्ट की प्रतिष्ठा हुई। सं. 1923 में गौड़ी पार्श्वनाथ के अन्तर्गत आदिनाथजी, सं. 1924 में सेटूजी द्वारा श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर बनवाया गया। सं. 1931 में कुंथुनाथजी का मन्दिर रांगडी चौक में बना। इसी प्रकार सं. 1964 में श्री विमलानाथ जी के मन्दिर, कोचरों के चौक में आदिनाथ जी प्रतिष्ठित हुए। सं. 1993 में दुगड़ों की बगीची में गुरू मन्दिर बना और 1997 में रामलाल गुरू जी का मन्दिर बना। इसी काल क्रम में रेलदादा बाड़ी और उपासरे (उपाश्रय) बने, जिनसे बीकानेर में जैन विचारों का प्रसार होता चला गया और आज भी उसका प्रभाव देखा जा सकता है।

शान्तिनाथ मन्दिर, नाहटा चौक

बीकोनर के व्यस्ततम और संकरे रास्तों में भी कई जैन मन्दिर देखे जा सकते हैं। उनमें ही है शांतिनाथ जी का मन्दिर। संवत् 1897 (शक संवत् 1762) में बीकानेर नरेश महाराजा रतनसिंह जी के समय बना यह मन्दिर नाहटों की गुवाड़ में खतरगच्छ की आचार्य शाखा के उपासरे के ठीक सामने है। इसमें शान्तिनाथ जी, गौतम स्वामी, पार्श्वनाथ जी, सुपार्श्वनाथ जी, कुंथुनाथ जी, ऋषभदेव जी की प्रतिमाएं है।



मुख्य द्वार व गर्भगृह

इनके अलावा चन्द्रप्रभु जी, मुनिसुव्रत जी आदि की भी दर्शनीय प्रतिमाएं है। पूर्वाभिमुख मन्दिर में गर्भगृह और पास में दोनों ओर दो सेहरियां हैं। ऋषभदेव की एक प्रतिमा के अलावा सभी प्रतिमाएं संगमरमर की ही बनी हैं। गर्भगृह में कांच की मीनाकारी का सुन्दर काम हुआ है। गर्भगृह में तीन प्रतिमाएं विराजमान हैं। मूलनायक के रूप में शांतिनाथ जी उनके बाईं ओर पार्श्वनाथ जी हैं। सभी प्रतिमाएं लेख युक्त है। एक अलग देहरी में गौतम स्वामी की मूर्ति तथा जिनसागर सूरी के चरण स्थापित है।

मूलनायक और सेहरियों में विराजित जिनदेव

गर्भगृह के दाएं बरामदे में दीवार पर मन्दिर के निर्माण सम्बन्धी शिलालेख भी लगा है जो अग्रलिखित है-

श्री ए नमः संवत् 1897 वर्षे शाके 1762 प्रवत्तमाने मा सोत्तम मासे वैशाख मासे शुक्लपक्षे शष्टयां तिथौं 6 गुरूवारे वृहत् खरतराचार्य गच्छीय समस्त श्री संघेय श्री शांतिनाथस्य प्रासादं कारितम्। प्रतिष्ठितं च भट्टारक जंगम युग प्रधान भट्टारक शिरोमणि श्री श्री 1008 श्री जिनोदय सूरि भिः महाराजाधिराज राजराजेष्वर नरेन्द्र शिरोमणि महाराजा श्री श्री रतनसिंह जी विजयराज्येत इति प्रशस्ति।।छ।। ज्यां लग मेरू अडिग्ग है जहां लग सूरज चंद तहां लग रहज्यो अचल यह जिनमन्दिर सुखकंद।।1।। श्री श्री संघयुक्ताः तांकारक पूजकानां श्रेयोस्तु सततं श्री।।

इस लेख के अनुसार संवत् 1897 में वैशाख शुक्ल 6 गुरूवार को श्री संघ ने श्री जिनोदयसूरि के समय करवाया था। मूलनायक की प्रतिमा गोलछा महाराजा रतनसिंह जी के कार्यकाल में ही इस मन्दिर का थानसिंह मोतीलाल कारित और जिनोदय सूरि द्वारा प्रतिष्ठित है। बिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव गोलछा माणकचंद ने करवाया था। यह मन्दिर उस दौर के वैष्णव मन्दिरों की तरह ही बना है। हम जानते है कि रतनबिहारी जी का मन्दिर महाराजा रतनसिंह जी के द्वारा निर्मित है। इस मन्दिर को देखने के बाद यह आश्चर्य करने लायक कुछ नहीं रह जाता कि यह जिनालय वैष्णव मन्दिर की तरह क्यों लगता है। खुले आंगन में चारों ओर बरामदे और लम्बी-चौड़ी प्रदक्षिणा और बाहर का स्वरूप हवेली जैसा है। यह सब रतनबिहारी जी के मन्दिर में मिलता है। निश्चय ही उस दौर के कारीगर एक जैसे ही मन्दिर बनाते रहे होंगे। यह श्री रघुनाथ मन्दिर, चौतीना कुआं के भी समकक्ष है।



मन्दिर के बरामदे 5 फीट चौड़े और करीब 15 फीट लम्बे हैं। गर्भगृह के आगे का बरामदा 15 फीट चौड़ा और 20 फीट लम्बा है। यहां स्तम्भों की संख्या भी वैष्णव मन्दिरों की तरह ही है। बरामदे और छत लाल दुलमेरा पत्थर से बने करीब 24 स्तम्भों पर आधारित है। आंगन के दाएं बरामदे में क्षेत्रपाल भैरव के दो

स्वरूप विद्यमान है। जिसमें एक नाकोड़ा भैरव और दूसरे में सामान्य भैरव की प्रतिमा है। इन पर अन्य की भांति सिन्दूर-पाना का लेपन किया गया है। एक और बंगली है उसमें अधिष्ठायक देव को विराजित किया गया है। सामान्यतः क्षेत्रपाल जो है वह मुख्य द्वार के दोनों ओर विराजमान होते हैं, लेकिन यहां ऐसा नहीं है। जैन मन्दिरों में क्षेत्रपाल के रूप में भैरव की प्रतिमाएं सभी मन्दिरों में मिलती हैं। अधिष्ठायक देव के रूप यह पहला प्रमाण है। ऐसी ही एक प्रतिमा हमें मरूनायक मन्दिर, मोहता चौक के बाहर भी मिलती है। यह संभवतया संस्थापक की प्रतिमा हो सकती है।





क्षेत्रपाल भैरव व अधिष्ठायक देव

यह जिनालय अब तक देखे गए जैन मन्दिरों में सबसे अलग है। यह बाहर से देखने पर कहीं से भी मन्दिर का सा आभास नहीं दिलाता। हवेली की तरह बाहर से लाल पत्थर का बना है तथा पास की गली में इसके कई झरोखे खुलते हैं। यह मन्दिर स्थापत्यक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

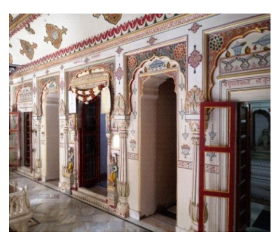
जिस तरह का इसका मुख्य द्वार है वैसा सामान्य रूप से शहर की हवेलियों में मिलता है। द्वार के एक ओर चौकी बनी है तथा दूसरी ओर दीवानखाना है। दीवानखाने में पुजारी परिवार का निवास स्थान है। दीवानखाने के नीचे के घुम्हारिए में दुकान होने से इसके हवेली होने के प्रमाण और पुष्ट हो जाते हैं। आंगन में उत्तर-पूर्व के कोने में स्नानघर भी बना है। सामान्यतः हवेलियों में भी यहीं स्नानघर मिलता है।

जैसा मैने कहा बाहर से इसे मन्दिर कह पाना संभव नहीं लेकिन भीतर से ही इसकी पुष्टि होती है। यह मन्दिर अन्य जैन मन्दिरों से एकदम भिन्न है। यह पुश्टिमार्गी मन्दिरों की तरह बना है। मैने पुजारी **श्री झंवर जी** की पत्नी से जानना चाहा कि ऐसा क्यों लग रहा है कि यह मन्दिर कम हवेली ज्यादा लग रही है। श्रीमती झंवर के अनुसार पिछले 50 वर्ष से हम पूजा का काम कर रहे हैं और पहले का पता नहीं।

मन्दिर में खुला आंगन है और सभी ओर बरामदे हैं। यह पहला जैन मन्दिर है जिसका फर्श सफेद और काले संगमरमर का बना है। इस तरह के पत्थर वैष्णव परम्परा में राधा और कश्शण के प्रतीक के रूप में पहचाने जाते हैं। प्रदक्षिणा भी अन्य जिनालयों से बड़ी और चौड़ी है जो जैन मन्दिरों की परम्परा नहीं है। इस तरह का निर्माण वैष्णव व पुष्टिमार्गी मन्दिरों की पहचान है।







श्वेत-श्याम आंगन और बरामदे

इस जिनालय में सुन्दर भित्तिचित्रण भी हुआ है। बरामदे और डाटदार छतें उस्ता कला की बेजोड़ कलम का प्रमाण दे रही हैं। यद्यपि यहां किसी प्रसंग को लेकर या जैन कथाओं पर आधारित चित्रण नहीं है, लेकिन प्रकृति चित्रण हुआ है। ऐसा चित्रण हमें शहर की कई हवेलियों में देखने को मिलता है।




मन्दिर में शिखर न होकर गुम्बद बने हैं। सामान्य रूप से गर्भगृह के ऊपर शिखर होता है, लेकिन इसमें गर्भगृह और सेहरियों के ऊपर गुम्बद ही बने हैं। ये गुम्बद मध्यकालीन स्थापत्यक शैली के प्रतीक के रूप में देखे जा सकते हैं। यहां एक प्रकार से खड़े गुम्बद बने हैं। सामान्यतः गोल गुम्बद फर्श से ही बनता है लेकिन यहां कुछ अलग ही है। इस प्रकार की स्थापत्यक विशेषता भी इस मन्दिर को अन्य से अलग करती है। मुख्य छत के बाहर की ओर भी छोटी तिबारी बनी है। ऐसी तिवारी रतनबिहारी जी और मदनमोहन जी मन्दिर के ऊपर भी बनी है। जल संरक्षण का भी उचित प्रबंध किया गया है।





गुम्बद और तिबारी

इस प्रकार शहर के जैन मन्दिरों में शांतिनाथ जिनालय अपने स्थापत्य से स्वयं को अलग रखता है। संभवतः ऐसा दूसरा जिनालय नहीं मिलेगा।

संदर्भ---

1. वसुदेव शरण अग्रवाल, संपादक अगरचंद नाहटा, भंवरलाल नाहटा, बीकानेर जैन लेख संग्रह, नाहटा ब्रदर्स, 4, जगमोहन मलिक लेन, कलकत्ता, संवत् 2012, पृ. 25
2. उपरिवत् पृ. 24
3. उपरिवत् पृ. 25